<u>वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार/ क्षेत्र</u>

समाज में कोई दो व्यक्ति समाज नहीं हैं। व्यक्तियों में अनेक प्रकार की भिन्नताएँ पायी जाती हैं जैसे

(1) शारीरिक वृद्धि और विकास सम्बन्धी भिन्नता,

(2) मानसिक विकास सम्बन्धी भिन्नता,

(3) गामक विकास सम्बन्धी भिन्नता

(4) संवेगात्मक विकास सम्बन्धी भिन्नता,

(5) सामाजिक विकास सम्बन्धी भित्रता,

(6) भाषा विकास सम्बन्धी भिन्नता,

((7) नैतिक एवं चारित्रिक विकास सम्बन्धी भिन्नता,

(8) सौन्दर्य बोध तथा सौन्दर्यात्मक

(9) रूचियों के आधार पर भित्रता,

(10) अभिवृत्ति सम्बन्धी भिन्नता,

(ll) अभिरूचि सम्न्धी मित्रता,

(12) विचारों और मान्यताओं सम्बन्धी मित्रता,

(13) विशिष्ट योग्यताओं सम्बन्धी भिन्नता,

(14) मूल्यों और आदशों सम्बन्धी मित्रता,

(15) आकांक्षा स्तर सम्बन्धी मित्रता,

(16) अधिगम क्षमता सम्बन्धी मित्रता,

(17) उपलब्धि सम्बन्धी मित्रता,

((18) बुद्धिलब्धि की दृष्टि से मित्रता,

(19) अध्ययन आदतों सम्बन्धी मिन्नता

(20) व्यक्तित्व में भिन्नता,

उपरोक्त भित्रताओं के अतिरिक्त बालकों में कतिपय अन्य भिन्नताएँ भी पायी जाती हैं। अधि महत्त्वपूर्ण वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं

(1) बुद्धि स्तर पर आधारित विभिन्नता (Differences in the Intellectual Level) - सभी व्यक्ति एक-सी बुद्धि वाले नहीं होते, कुछ प्रतिभाशाली होते हैं और कुछ पिछड़े हुये। बुद्धि परीक्षाओं के आधार पर हम यह पता लगा सकते हैं कि अमुक बालक या व्यक्ति प्रतिभाशाली (Genius) है, या तीव्र (Very-Superior) बालक है, या सामान्य (Normal) है, या मन्द बुद्धि (Dull) अथवा जड़ बुद्धि (Idiot) बालक है।

(2) शारीरिक विकास में विभिन्नता (Differences in Physical Development)-सभी व्यक्तियों का शारीरिक विकास समान रूप से नहीं होता। कुछ व्यक्ति मोटे होते हैं तो कुछ पतले, कुछ लम्बे होते हैं तो कुछ नाटे, किसी का रंग गोरा होता है किसी का साँवला, तो किसी का बिल्कुल काला, कोई बहुत सुन्दर और आकर्षक होता है तो कोई कुरूप और भद्दा कोई सबल होता है तो कोई निर्बल। इस प्रकार व्यक्तियों में शारीरिक दृष्टि से विभिन्नतायें होती हैं। शारीरिक विभिन्नता प्रायः जन्म से ही होती है। जैसे—किसी व्यक्ति के छः अंगुलियों का होना, नाक का चपटा या लम्बा होना, ओठों का बड़ा होना आदि-आदि। लेकिन कभी-कभी यह जन्म से न होकर बाद के जीवनकाल में हो जाता है, जैसे—दुर्घटना से हाथ या पैर का टूट जाना, मुँह का विकृत हो जाना आदि-आदि।

(3) संवेगात्मक विभिन्नता (Differences in Emotions)-भिन्न-भिन्न बालकों या व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के संवेगों का विकास होता है। कुछ व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहते हैं, कुछ सदैव उदास रहते हैं। कुछ अत्यधिक क्रोधी और चिड़चिड़े होते हैं, कुछ शान्त और गम्भीर होते हैं, कुछ में बहुत भावुकता होती है और कुछ में कम कुछ संवेगात्मक दृष्टि से स्थिर होते हैं उनका व्यवहार सामान्य होता है, जबकि कुछ व्यक्तियों में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है। उनका व्यवहार तनावपूर्ण रहता है और वे व्याकुल से रहते हैं।

(4) गतिवाही योग्यता में विभिन्नता (Differences in Motor-ability) विभिन्न बालकों और व्यक्तियों में गतिवाही योग्यता में विभिन्नता दिखाई देती है। कुछ बालकों में गति कौशल का विकास शीघ्रता से हो जाता है और कुछ में देर से होता है। एक ही आयु के कुछ बालक गतिकार्य शीघ्रता और कुशलता से करने में सफल हो जाते हैं जबकि दूसरे उन कार्यों को करने में असफल रहते हैं।"

(5) रुचियों में विभिन्नता (Differences in Interests) साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति की रुचियों दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होती है, किसी की पढ़ने में अधिक रुचि होती है तो किसी की खेलने में किसी की रुधि अच्छे वस्त्र पहनने की होती है तो किसी की अच्छा भोजन करने की में किसी की संगीत में रुचि होती है तो किसी की नाटक या चलचित्र देखने में पारिवारिक पृष्ठ-भूमि और विकास के स्तर आदि अनेक कारक बालक की रुचियों को प्रभावित करते हैं।

(6) सीखने में विभिन्नता (Differences in Learning) सीखने के सम्बन्ध में बालकों में बड़ा अन्तर देखा जाता है। विभिन्न आयु के बालकों में नहीं, समान आयु के बालकों में भी सीखने की गति, सीखने को रुचि और सीखने की तत्परता में अन्तर पाया जाता है। कुछ बालक सीखने में बड़े कुशल होते हैं, वे किसी चीज को बहुत शीघ्रता से सीख लेते हैं जबकि कुछ बालक उसी चीज को काफी देर से सीख पाते हैं।

(7) विशिष्ट योग्यताओं में विभिन्नता (Differences in Special Abilities) विशिष्ट योग्यताओं की दृष्टि से व्यक्तियों में विभिन्नतायें पाई जाती हैं। कोई बालक अंग्रेजी में अच्छा होता है, कोई गणित या हिन्दी में कुछ बालक वाचन में श्रेष्ठ होते हैं। कुछ लेखन में अच्छे होते हैं। एक तो सभी व्यक्तियों में विशिष्ट योग्यतायें नहीं पाई जाती है, दूसरे जिन में पाई जाती हैं उनमें इनकी मात्रा में अन्तर होता है। जैसे- सभी खिलाड़ी समान स्तर के नहीं होते।

(8) सामाजिक विकास में विभिन्नता (Differences in Social Development)- बालक और बालिकाओं दोनों के सामाजिक विकास में अन्तर पाया जाता है। किसी बालक में सामाजिक परिपक्वता शीघ्र आ जाती है और किसी में बहुत देर से आती है। सामाजिक गुणों की दृष्टि से भी बालकों में अन्तर होता है। कुछ बालकों में नेतृत्व के गुण होते हैं, जबकि कुछ में अनुकरण की प्रधानता होती है। कुछ वहिर्मुखी होते हैं तो कुछ अन्तर्मुखी बालकों के लड़ने में और मित्र बनाने में भी विभिन्नता पायी जाती है।